

रुचि चिंतनना सांनिध्यमां

गायत्री अने
यज्ञ भारतीय
संस्कृतिना
मातापिता

गायत्री मंत्र अमारी साथे साथे

ॐ बूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं बर्गो- ।
देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

अभिल विश्व गायत्री परिवार

<http://awgp.org>

<http://rushichintan.com>

गायत्री अने यज्ञ भारतीय संस्कृतिना मातापिता

देवीओ अने भाईओ,

गायत्री भारतीय संस्कृतिनी जननी अने यज्ञ भारतीय धर्मना पिता छे. भारतीय तत्वज्ञाननो सार आ बंने तथ्योमां समायेलो छे. तेथी गायत्री अने यज्ञने आपणे अनादिकाजथी आपणां आध्यात्मिक मातापिता मानीये छीये.

गायत्री महामंत्र उपासनानी दृष्टिअे परम सामर्थ्यवान छे. शास्त्रकारोअे तेना पांच मुभ, पांच नाम दर्शाव्यां छे :

(१). अमृत, (२). पारस, (३). कल्पवृक्ष, (४). कामधेनुं, (५). ब्रह्मा.

आ पांचेय द्वारा जे लाल उहावी शकाय छे, ते सर्वने आपी शकवाना क्षमता आ महामंत्रमां समायेली छे. मनुष्यनी अंदर अन्नमय कोश, मनोमय कोश, प्राणमय कोश, विज्ञानमय कोश अने आनंदमय कोश छे. आ पांचेयमां अगणित रहस्यमय शक्तिओ छुपायेली छे. तेमने जागृत करवा गायत्री उपासनाथी श्रेष्ठ बीज कोई मोटी साधना नथी. षट्चक्रोनुं लेदन, कुंडलिनी जागरण, स्थूल, सूक्ष्म अने कारण शरीरोनुं शुद्धीकरण तथा १२ महत्वपूर्ण योग साधनाओनी सङ्ग साधना गायत्रीना माध्यमथी ज थई शके छे. आ महाशक्तिने तंत्रमार्गथी प्रयोजने आश्चर्यचकित करी देनार सिद्धिओ प्राप्त करी शकाय छे. योगसाधनानुं केन्द्रबिंदु आपणा धर्ममां गायत्री महामंत्र ज रह्यो छे.

आत्मबल वधारवा अने आत्मशुद्धि माटेनो आ सार्वजनिक सार्वभौम मंत्र छे. तेनी उपासना नरनारी, बाणक-वृद्ध कोई पण करी शके छे. बुद्धिने प्रकाशवान अने प्रभर बनाववी अंतःकरणमां ऋतंभरा प्रज्ञाने प्रकाशवान करवी, अे गायत्रीनी सौथी मोटी विशेषता छे. तेथी भारतीय धर्मना दरेक अनुयायी माटे आ मंत्रनी उपासना नित्य अनिवार्य दर्शावी छे. जे तेनी उपेक्षा करे छे. तेनी कडक शब्दोमां टीका करवामां आवी छे कोई माणस गमे ते देवता के मंत्रनी साधना लले करतो होय, एतां तेने सौथी पहेलां गायत्री द्वारा अंतःकरण चतुष्टय तथा इंद्रियसमूहने शुद्ध करवो पडे छे.

ऋषि चिंतनना सांनिध्यमां

तेना विना कोई साधना सङ्ग थई शकती नथी. कष्ट, संकट विपत्ति अने चिंताजनक मूँळवणो हल करवा माटेनो मार्ग प्राप्त करी शके छे. निराशाजनक परिस्थितियोंमां आशानो प्रकाश उत्पन्न करवा अने ખालीपणाने समृद्धिमां बदली नाभवानी शक्ति आ महामंत्रमां कटली हई सुधी भरेली छे तेनी परीक्षा कोईपण व्यक्ति श्रद्धापूर्वक गायत्रीमंत्रनी उपासना करीने क्यारेय पण करी शके छे.

भारतीय धर्मनो समग्र विस्तार वेदोथी थयो अने चारेय वेद गायत्रीना चार चरणोनी व्याख्या मात्र छे. जे आपणा धर्मग्रंथोमां कहेवामां अने समझववामां आव्युं छे ते सर्व बीजरूपे गायत्रीमां मौजूद छे, आ मंत्रना २४ अक्षरोनी व्याख्या करवामां आवे, तो तेमां नीति, धर्म, सदाचरण तथा लोकव्यवहारनुं अेवुं शिक्षण वणायेलुं मणशे, जेने अपनावीने मनुष्य पोतानो लोक अने परलोक सुभशांतिमय बनावी शके छे. विवेकबुद्धिने प्राथमिकता आपवी अने तेने सर्वोपरी ईश्वरीय संदेश मानवो अे गायत्रीनो सार छे. नीरक्षीरनो विवेक अयोग्यने छोडवानो अने योग्यने स्वीकारवानो निर्देश करे छे. माताना रूपमां गायत्रीनी प्रतिमा बनावीने अे प्रतिपादन करवामां आवे छे के नारीनी पवित्रता अने सत्ता नर करतां अधिक छे. तेथी तेने दरेक क्षेत्रमां अधिक श्रेय, सन्मान प्रदान करवुं जोछये. गायत्रीनुं तत्वज्ञान अपनावीने जो आपणे दूरदर्शी, विवेकशील अने नीतिवान बनी शकीअे अने नारी प्रत्ये अति पवित्र बुद्धि राभीअे, तो आ धरती उपर स्वर्गना अवतरणनी संभावनाओ मूर्तिमान करी शकीअे छीअे.

आपणे नित्य नियमित रूपनी गायत्री उपासना माटे थोडो समय काढता रहेवुं जोछये. घर-परिवारमां अे प्रथा-परंपरा चलाववी जोछये के घरनो दरेक सत्य नित्य गायत्री मंत्रनी साधना करे, भले पछी अे पांच मिनिट माटे ४ केम न होय.

गायत्री माताना रूपमां ईश्वरनी उपासना करवाथी प्रेमनुं सर्वोपरी केन्द्रबिंदु अेवा मातृहृदयनी भावना करवानो अवसर आपणने मणे छे. जे रूपमां भगवानने आपणे भज्जये छीअे तेवी ४ अनुभूति तेओ प्रदान करे छे. स्नेहमयी मातानुं ध्यान आपणने वात्सल्यनी भावभरी अनुभूतियोंनी पुलकित करी हे छे.

ऋषि चिंतनना सांनिध्यमां

जेने माताना रुपमां गायत्री महाशक्तिनी उपासनामां निराकार-साकारनी मुश्केली होय तेओ प्रातःकालमां उदय थता, समस्त प्राणीओने प्राण प्रदान करनार परम तेजस्वी सूर्यनुं ध्यान करतां करतां गायत्री मंत्रना जप ध्यान करी शके छे. पूजानी विधि अति सरल छे. शरीरने शुद्ध करीने स्वच्छ स्थान अने शांत वातावरणमां आसन पाथरीने बेसवुं जोछये. आयमन माटे जल अने प्रकाश तथा ॐ माटे अंगरबत्ती वगेरेथी अग्निनी स्थापना करीये तो वधु सारुं पवित्रीकरण, आयमन वगेरे क्रियाओ पछी भगवाननी समीपतानुं ध्यान करतां करतां गायत्री मंत्रनो जप करवो जोछये. नियत संख्या अने नियत समयनुं ध्यान राखवुं जोछये अने अंतमां सूर्यनी दिशामां मों राप्पी अर्घ्य आपीने श्रद्धांजलि अर्पित करवी जोछये.

गायत्री महाविज्ञान' ग्रंथमां उपासनाना योग अने तंत्रमार्गना विस्तृत प्रयोग लभ्या छे, पण सर्व-साधारण माणसनुं काम उपरोक्त संक्षिप्त विधिथी पण चाली शके छे.

गायत्रीनो पूरक यज्ञ छे. आ अेक अति महत्वपूर्ण विज्ञान छे, जे विश्वव्यापी चेतन जगतने प्रभावित करे छे. जऽ जगतने प्रभावित करनार अनेक वैज्ञानिक प्रक्रियाओ छे. ठंडीने गरमीमां बदली नांभनार हीटर अने गरमीने ठंडीमां बदली नांभनार 'कूलर' पोतानो चमत्कार देभाडे छे. अंधकारने रोशनीमां बदली नांभनार वीजलीनो लाभ हरकोछ जाणे छे, पण मानवीय चेतना अने विश्वव्यापी चेतनाने प्रभावित करनार यज्ञविद्या विषे बहु ज ओछी माहिती प्राप्त थाय छे. प्राचीनकालनुं अध्यात्मवादी विज्ञान पोतानी सक्रियताने माटे महत्वपूर्ण सहायता यज्ञीय ॐमांथी ग्रहण करतुं इतुं शारीरिक ज नहीं, मानसिक रोगोना निवारणनी अमोघ क्षमता यज्ञीय प्रक्रियामां भोज्ज छे. व्यक्तिगत तथा सामूहिक संकटोनुं निवारण करती शक्तिशाणी ॐ यज्ञो द्वारा वातावरणमां प्रसरावी शक्य छे.

प्रकृतिगत वातावरण तेना द्वारा बदली शक्य छे, पण आजे तो आ समग्र विज्ञान ज विस्मृत थछ गयुं तेनी शोध करीथी करवी जोछये अने आ अति सरल, परंतु महत्वपूर्ण विज्ञाननो लोकोना सुभशांति वधारवा माटे उपयोग करवो जोछये.

ऋषि चिंतनना सांनिध्यमां

आ कार्य शोधकर्ता अध्यात्म विज्ञानीઓનું છે કે તેઓ આપણી લુપ્ત વિદ્યાઓનું અન્વેષણ કરી તેમને પુનઃપ્રાપ્ત કરે અને તેના દ્વારા માનવીય પ્રગતિમાં મહત્વપૂર્ણ યોગદાન આપે. આ કાર્ય થોડા સમય પછી આપણે શરૂ કરવાના છીએ અને આશા રાખવી જોઈએ કે યજ્ઞ વિદ્યાના માધ્યમથી માનવજાતિને એક નવીન, અતિ પ્રાચીન તથા અતિ મહત્વપૂર્ણ શક્તિ હાથ લાગશે અને તેના માધ્યમથી આપણે આપણા ખોવાયેલા વર્ચસ્વને પુનઃ પ્રાપ્ત કરી શકવામાં સમર્થ થઈશું.

યજ્ઞના તત્વજ્ઞાનની પ્રથમ પ્રેરણા એ છે કે મનુષ્ય યજ્ઞીય જીવન જીવે. જે પ્રકારે હવનકુંડમાં જ્વાલાઓ ઊઠે છે, તે જ પ્રકારે આપણા અંતઃકરણમાં શૌર્ય, સાહસ, વિવેક, સત્ય, કર્તવ્ય વગેરે સદ્ગુણોની પ્રખરતા દિપ્તિમાન રહે. જે પ્રકારે હવન દ્વારા વાયુમંડળ સુગંધિત થાય છે તે જ પ્રકારે જો આપણું કર્તવ્ય દયા, કરુણા, સેવા અને સહૃદયતાની ભાવનાઓથી ઓતપ્રોત હોય, તો આ કર્તવ્ય દ્વારા સહયોગ, સદ્ભાવનાનું તથા સુખશાંતિનું વાતાવરણ બને તે માટે પ્રયત્નો કરવા જોઈએ. આ પવિત્રતા અને પ્રખરતાનું પ્રતીક છે અને યજ્ઞપૂજકોની વિચારધારા અને ક્રિયાપદ્ધતિ આ જ માન્યતાઓથી ઓતપ્રોત હોવી જોઈએ.

વ્યક્તિગત સુવિધા અનુસાર ધી,સાકર, ઔષધિઓ વગેરેનો હવન કરીને આપણે સુખદાયી વાયુમંડળ બનાવવા અને તેનો લાભ સમસ્ત પ્રાણીઓને પહોંચાડવાની ભાવના રાખીએ છીએ. તે જ રીતે આપણું સમસ્ત જીવન યજ્ઞમય બને અને તેનો લાભ સમસ્ત સંસારના પ્રાણીઓને મળે તેવા ઉમંગો પણ મનમાં જાગતા રહેવા જોઈએ. અગ્નિહોત્રની ધાર્મિક પ્રક્રિયા જીવનને યજ્ઞમય બનાવવા આધ્યાત્મિક ક્ષેત્રમાં પણ પ્રકટ કરી શકીએ તેવો આપણે પ્રયત્ન કરવો જોઈએ.

ગાયત્રી અને યજ્ઞનું યુગ્મ આપણી સંસ્કૃતિ અને ધર્મના જનક છે. તેમનો સમુચિત પ્રભાવ આપણા જીવનમાં ઓતપ્રોત થાય એ જ યોગ્ય છે.